नाथपंथ का उदय, प्रभाव और अलवर के प्रमुख नाथ संत

डॉ. डी.सी. चौबे
सह-आचार्य, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय, उच्चैन (भरतपुर)

अलवर का अरावली क्षेत्र संतों की तपोभूमि रहा है। यहाँ पराशर और मांडव्य ऋषि के आश्रम रहे हैं। यहाँ के सरिस्का के घने जंगलों में पांडुपोल है जहाँ पर हनुमान जी और भीमसेन की भेंट हुई थी। अलवर की पश्चिमी सीमा पर विराट राज्य था जिसके यहाँ पांडवों ने अपने अज्ञातवास पूर्ण किये और बाद में विराट की राजकुमारी उत्तरा से वीर अभिमन्यु का विवाह हुआ था, जिससे परीक्षित का जन्म हुआ और पांडवों का वंश दीप जलता रहा।

राजस्थान की धरा पर एक से एक बढ़ कर नाथपंथ के पीठ हैं, पर इनमें सबसे बड़ा नाम भर्तृहरि का नाम है। इनकी बड़ी पीठ जोधपुर में भी है। पर यहाँ पर हम पूर्वी राजस्थान के नाथ पंथ की चर्चा करेंगे। भरतरी के बाद इस क्षेत्र में मस्तनाथ, तोतानाथ , खेतानाथ और चाँदनाथ जैसे नाथ महंथ हुए।

'नाथ' शब्द का प्रचलन हिन्दू, बौद्ध और जैन संतों के बीच विद्यमान है। 'नाथ' शब्द का अर्थ होता है स्वामी। वैष्णवों में स्वामी और शैवों में 'नाथ' शब्द का महत्व है। आपने अमरनाथ, केदारनाथ, बद्रीनाथ आदि कई तीर्थस्थलों के नाम सुने होंगे। आदि का अर्थ प्रारंभ होता है। भगवान शंकर को 'भोलेनाथ' और 'आदिनाथ' भी कहा जाता है। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम आदीश भी है।

इस आदिश शब्द से ही आदेश शब्द बना है। 'नाथ' साधु जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं- आदेश। भगवान शंकर की परंपरा को उनके शिष्यों बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्त्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज, अगस्त्य मुनि, गौरशिरस मुनि, नंदी, कार्तिकेय, भैरवनाथ आदि ने आगे बढ़ाया।

भगवान शंकर के बाद इस परंपरा में सबसे बड़ा नाम भगवान दत्तात्रेय का आता है। उन्होंने वैष्णव और शैव परंपरा में समन्वय स्थापित करने का कार्य किया। दत्तात्रेय को महाराष्ट्र में नाथपरंपरा का विकास करने का श्रेय दिया जाता है। दत्तात्रेय को आदिगुरु माना जाता है।

भगवान दत्तात्रेय के बाद सिद्ध संत गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने 'नाथ' परंपरा को फिर से संगठित करके पुनः उसकी धारा अबाध गति से प्रवाहित करने का कार्य किया। ये चौरासी नाथों की परंपरा में सबसे प्रमुख हैं। इन्हें बंगाल, नेपाल, असम, तिब्बत और बर्मा में खासकर पूजा जाता है।

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के बाद उनके शिष्य गुरु गोरखनाथ ने शैवधर्म की सभी प्रचलित धारणाओं और धाराओं को एकजुट करके 'नाथ' परंपरा को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया। उनके लाखों शिष्यों में हजारों उनके जैसे ही सिद्ध होते थे।

राजस्थान के राजपरिवारों ने अपनी शैवधर्म में रुचि दिखायी। ऐसा मन्दिर निर्माण, भूमि दान आदि से प्रमाणित होता है। उदयपुर के महाराणाओं ने बप्पा द्वारा निर्मित एकलिंगजी के मन्दिर को भेंट एवं उपहार देकर अपनी शैव श्रद्धा प्रकट की। जोधपुर, कोटा, बाँसवाडा, अलवर, जयपुर, किशनगढ, बीकानेर आदि स्थानों में भी राजपरिवारों द्वारा शिवालय स्थापित करवाए गए।

जोधपुर में राव गांगा की रानी नानिक देवी ने अचलेश्वर मन्दिर बनवाया तथा अचल यश की भागिनी बनी।[1] राजस्थान में सिद्ध, नागा आदि के अनेक अखाडे स्थापित थे। ये सिद्ध कभी-कभी नंगे रहना, सम्पूर्ण अंग पर भस्म मलना, अग्नि तपना, शरीर को प्राकृतिक स्थिति में अनुकूल रख कर तपस्या करने आदि में विश्वास रखते थे।[2] राजपूताना के नाथ योगियों की संख्या अधिक थी।

जालोर के चौहान[3] तथा आबू के परमार[4] भी रावल शाखा के योगियों के भक्त थे। जैसलमेर, जोधपुर, अलवर व जयपुर के नरेशों के भी धर्मगुरु नाथ योगी थे। जयपुर के नाथावत, चम्पावत तथा मारवाड के कूँपावत भी नाथ भक्त थे। यहाँ तक कि उनके तम्बू, झंडे और घोडों की काठी के कपडों की खोली का रंग भी गेरुआ होता था।[5]

राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय का प्रवेश, उद्भव एवं विकास

राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय का प्रवेश आठवीं-नवीं शताब्दी में बप्पा रावल के समय मेवाड रियासत से माना जाता है। स्वयं बप्पा रावल नाथभक्त थे। मेवाड में इस सम्प्रदाय का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ हो गया था। बीकानेर, अलवर, जयपुर रियासतों में भी तत्कालीन राजाओं ने नाथ सम्प्रदाय में अपनी आस्था प्रकट की और नाथपंथी साधुओं को अपने राज्य में आश्रय प्रदान किया तथा इनके चमत्कारों से प्रभावित होकर इनमें आस्था प्रकट की, जिसके परिणामस्वरूप राजस्थान में नाथसम्प्रदाय का प्रसार हुआ एवं अनेक नाथपीठें (मठ) स्थापित हुई।[6]

राजस्थान के पुरातात्विक स्त्रोतों से ज्ञात हुआ है, कि राजस्थान में नाथसम्प्रदाय का उद्भव नरवाहन के काल के एकलिंगेश्वर मन्दिर स्थित लेख 971 ई. से मिलता है। जैसलमेर के देवराज ने 12 वर्ष तक रावल रतननाथ की सेवा की थी।

एक दिन रतननाथ ने देवराज को प्रसन्न होकर कहा कि 'आवौ सिंध रावल राज' तब देवराज ने बाबा रतननाथ के पाँव छुए तब बाबा ने वचन दिया कि तुम्हारा वंश बढेगा और आप प्रतापी राजा होंगे तथा 121 वर्ष तक राज करेंगे। इतना कहकर दो वस्तुएं प्रदान करते हुए आशीर्वाद दिया और कहा कि गद्दी पर बैठते समय जोगी का वेष धारण करना उसके पश्चात् राजकार्य करना।[7]

विक्रम संवत् 909 को देवराज रावल कहलाए और राजा बने। देवराज का जन्म बैशाख सुद 14 संवत् 892 को हुआ। संवत 1030 को युद्ध में काम आए। राजस्थान के मेवाड़ में एकलिंग के मन्दिर में स्थापित लेख जो 971 ई. में लिखा गया है उसमें उल्लेख है कि इस मन्दिर का प्रतिष्ठा बप्पा ने करवायी थी। उदयपुर राजघराने के इष्टदेव एक लिंगेश्वर महादेव के समस्त पुजारी लकुलीश की शिष्य परम्परा से है।

बप्पा (चित्तौड़) के गुरु हारीत ऋषि इसी लकुलीश पाशुपत सम्प्रदाय के एक सिद्ध पुरुष माने जाते हैं। इसी प्रकार जालोर के सिरे मन्दिर में सं. 1825 में सुआनाथ के राताढूंढा (अजमेर) से वहां जाने के पश्चात् एक नवीन शिलापट्ट लिखा गया जिसमें विक्रम संवत् 931 (ईस्वी 875) में राताढूंढा आसन के स्थापित होने का उल्लेख मिलता है।[8]

इस प्रकार अन्य प्रमाण भी उपलब्ध होते हैं, जो 15वीं सदी के बाद के हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय के प्रवेश का प्रमाण नवीं शताब्दी अर्थात् विक्रम संवत् 909 (ईस्वी 853) जैसलमेर के देवराज का है।

राजस्थान में नवी सदी से नाथों के प्रवेश के पश्चात् 15वीं सदी तक नाथपंथियों का प्रभाव रहा है। यहाँ के शासकों ने इस पंथ को आश्रय प्रदान किया। पन्द्रहवीं सदी में राजपूतों की शाखा के साथ वैष्णव भक्ति का प्रवेश भी राजस्थान में हुआ था। मेड़ता में मीरा के गुरु भी नाथपंथी साधु थे। ऐसा आचार्य द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य उद्भव एवं विकास' में मीरा के भजनों में गुरुचर्चा के आधार पर लिखा है।[9]

मत्स्यप्रदेश, ढूंडार ही नहीं वरन् मारवाड और मेवाड सहित न केवल राजस्थान वरन् भारत की सम्पूर्ण भूमि पौराणिक काल से ही नाथपंथी योगियों की तपःस्थली रही है और नाथपंथी योगियों के चमत्कारों तथा सिद्धियों की कथाओं से राजस्थान सहित भारत का इतिहास अटा पड़ा है।

चौदहवीं शताब्दी के महान् यात्री इब्नबतूता द्वारा लिखित अपने यात्रावृत्तान्त रहेला में तो मुहम्मद तुगलक के दरबार में शिष्य योगी द्वारा पद्मासन लगाकर धरातल के ऊपर उठने और गुरु योगी द्वारा अपनी खडाऊ से भूमि पर प्रहार कर उसे नीचे उतार देने के चमत्कार को देख कर स्वयं (इब्नबतूता) के मूर्छित हो जाने का वर्णन किया। इब्नबतूता ने अपने यात्रावृत्तान्त में योगियों द्वारा बाघ का रूप धारण कर विचरण करना भी वर्णित किया है।

इसी प्रकार सम्राट शम्सउद्दीन अल्तमश के पास जो बाद में सम्राट ग्यासउद्दीन बलबन के नाम से प्रसिद्ध हुआ, को किसी योगी द्वारा ही आशीर्वादस्वरूप भारत का सम्राट होना इब्नबतूता ने लिखा है।[10]

नाथ सम्प्रदाय में मुख्य रूप से दो तरह के अनुयायी निवास करते हैं प्रथम जन्मजात नाथ, दूसरा - नाथ गुरु का शिष्य (चाहे वह किसी भी जाति-समाज से हो)। समस्त भारतवर्ष में नाथ-सम्प्रदाय की विकास परम्परा द्विविध ही है।

पहला है शिष्यपरम्परा तथा दूसरा पुत्रपरम्परा। योगी गुरु के शिष्य एवं पुत्र दोनों नाथ उपाधि से अलकृंत होते हैं। ऐसा नाथसम्प्रदाय के प्राचीन साहित्यिक ग्रन्थ 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' में वर्णित हैं-

नाथात् द्विप्रकारा सृष्टिर्जाता - नादरूपा बिन्दुरूपा च।

नाद रूपा च शिष्य बिन्दु रूपा च पुत्र क्रमेण।।[11]

प्रथमतः गुरु-शिष्य परम्परा नाद (वाणी) रूप में है। किन्तु राजस्थान के संत, सम्प्रदायों एवं लोकमानस पर उनका प्रभाव अत्यधिक रहा है। श्री गोरखनाथ जी की प्रेरणा-आशीर्वाद से उनके प्रमुख शिष्यों ने पंथों-उपपंथों का प्रवर्तन कर नाथसम्प्रदाय के विकास-विस्तार में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन प्रमुख पंथों में गौड (बंगाल) देश के श्री गोपीचन्द्र नाथ ने जोधपुर में माननाथी पंथ तथा उज्जैन के राजा योगी भर्तृहरि जी (सिद्ध विचार नाथ) ने राताढूँढा (पुष्कर) में वैराग्य पंथ की स्थापना कर राजस्थान और नाथसम्प्रदाय का गौरव बढ़ाया। ये गुरु गोरखनाथ द्वारा स्थापित 12 शाखाओं में वैराग्य पंथ एवं माननाथी पंथ के प्रथम प्रचारक थे।[12]

इनके अतिरिक्त आदिनाथ शिव द्वारा मारवाड के वन पंथ तथा स्वयं गोरखनाथ जी द्वारा जयपुर के पाव पंथ का उद्भव भी राजस्थान से ही माना जाता है। यहाँ (राजस्थान में ही) गुरु गोरखनाथ जी के नाथ-सम्प्रदाय की पृष्ठभूमि पर उनके कृपापात्र सिद्ध जसनाथ जी, जाँभोजी (जंभनाथ जी), हरिदास निरंजनी जी ने क्रमशः सिद्ध या जसनाथी सम्प्रदाय, विश्नोई सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया।

राजस्थान में नाथमत से प्रभावित साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालें, तो हमें यह साहित्य यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। डॉ. रामचन्द्र तिवारी तो राजस्थान में रचित पुरा संत साहित्य नाथ सम्प्रदाय से प्रभावित बताते हैं। साथ ही जसनाथी, निरंजनी और अलखिया सम्प्रदाय पर वे नाथयोग का विशेष प्रभाव भी मानते हैं।[13]

श्रीनाथ जी के भागीरथ ने उदैक आसन बनवाया जो, दासपंथी एवं गंगानाथी कहलाए। श्रीनाथ जी के लोतर पागल ने गहैलपुर छोवली का आसन बनवाया, जो रावल कहलाए।धर्मनाथ ने कोट कूलर का आसन बनवाया जो धर्मनाथी कहलाए।श्री सत्यनाथ ब्रह्माजी के रोईदास हुए, जिन्होंने धीनोघ्र का आसन बनवाया जो सत्यनाथ पंथी कहलाए। सबदनाथ के मननाथ हुए, जिन्होंने टांई माठमी का आसन बनवाया जो मननाथी कहलाए।

इस प्रकार 12 पंथों के नाम मिलते हैं, जिनके नामों से विभिन्न पंथों का चलन पड़ा। इस प्रकार देखने पर लगता है कि सम्पूर्ण राजस्थान में नाथसम्प्रदाय का बोलबाला था तथा विभिन्न मठ एवं पंथ स्थापित थे।[14]

मेवाड़ (उदयपुर संभाग):-

मेवाड़ में नाथयोगियों का उल्लेख आठवीं से सोलहवीं शताब्दी में पाया जाता है। मेवाड़ में नाथयोगियों की दो श्रेणियां विद्यमान थीं। एक मेवाड राजवंश के आराध्यदेव एकलिंगेश्वर के महन्त हारीत ऋषि की शिष्य परम्परा के नाथ योगी, जिन्हें समय-समय पर शासकों द्वारा आसन स्थापित करने हेतु भूमिदान दिया जाकर आश्रय प्रदान किया गया।

बप्पा रावल को हारीत के वरदान से ही मेवाड़ राज्य की प्राप्ति हुई थी। हारीत ऋषि की शिष्यपरम्परा के संदर्भ में नरवाहन के काल की एकलिंगेश्वर मंदिर स्थित 'नाथों के मंदिर की प्रशास्ति' (वि. 1028) उल्लेखनीय है।[15]

महाराजा जगतसिंह ने वि.स. 1687 में नाथ मठाधीशों के स्थान पर काशी के संन्यासी रामानन्द को बुलवा कर नियुक्त किया। तब से एकलिंगेश्वर मठाधीश गोस्वामी कहलाने लगे। स्थान पाशुपत सम्प्रदाय का था जिसके कारण गोस्वामियों की वेशभूषा नाथ महंतों की भांति प्रचलित रही। मेवाड के शासकों द्वारा आसनधारी नाथयोगियों को पुण्यार्थ भूमि प्रदान करने के सन्दर्भ दसवीं से सोलहवीं सदी पर्यन्त प्राप्त होते हैं।

सन्दर्भ सूची:-

1. हीराचन्द, डॉ. गौरीशंकर, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 11, हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग।
2. दाधीच, डॉ. आर. पी., राजस्थान संत सम्प्रदाय, पृ. 3
3. शर्मा, डॉ. जी. एन., राजस्थान का इतिहास, पृ. 503
4. शर्मा, डॉ. जी. एन., राजस्थान का इतिहास, पृ. 503

5. द्विवेदी, डॉ. हजारीप्रसाद, ने सांचोर के शिलालेख जिसे अपनी पुस्तक नाथ सम्प्रदाय में पृष्ठ 156 से महाराजा मानसिंह एवं उनका काल पुस्तक पृष्ठ 140 पर - शर्मा डॉ. पद्मजा ने उल्लेख किया है।

6. द्विवेदी, डॉ. हजारीप्रसाद, नाथ सम्प्रदाय, पृ. 156

7. शर्मा, डॉ. पद्मजा, महाराजा मानसिंह एवं उनका काल पुस्तक पृष्ठ 140 पर

8. सांखला, डॉ. कमल किशोर, राजस्थान के नाथ सम्प्रदाय का सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ संख्या 39, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, शोध केन्द्र जोधपुर, 2011

9. भाटी, डॉ. एस. एस., महाराजा मानसिंह दी मिस्टिक मोनार्क ऑफ मारवाड, पृ. 90 स्क्रीप्ट्स, डॉ. आर. पी. दाधीच

10. भाटी, डॉ. एन. एस., जैसलमेर की ख्यात, पृ. 38

11. जिज्ञासु, डॉ. मोहनलाल, चारण साहित्य का इतिहास, पृ. 49

12. सिह, राजदेव, संत साहित्य पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ 281

13. डॉ. पेमाराम, राजस्थान में धर्म, सम्प्रदाय व आस्थाएँ, सम्पादकीय

14. योगवाणी, फरवरी 1984, पृ. 25

15. शर्मा, डॉ. बी. एल., राजस्थान का नाथ साहित्य, पृष्ठ संख्या 59 एवं डॉ. हुकुम सिंह, भारत में नाथां रा आसण, पृष्ठ संख्या 66